बी.पी.ए.जी–171 : आपदा प्रबंधन
अध्यापक जांच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.पी.ए.जी.–171
सत्रीय कार्य कोड : ए.एस.एस.टी./टी.एम.ए./जुलाई–2026 और जनवरी–2027
पूर्णांक : 100

प्रिय छात्र/छात्राओं

इस सत्रीय कार्य में तीन भाग हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य–क

निम्नलिखित में से प्रत्येक के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. आपदा प्रबंधन में जोखिम और संवेदनशीलता की अवधारणाओं और उनके महत्व पर चर्चा कीजिए। 20

2. राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 के तहत स्थापित संस्थागत ढांचें की जाँच कीजिए। 20

सत्रीय कार्य–ख

निम्नलिखित में से प्रत्येक के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए।

3. जलवायु विज्ञान संबंधी आपदाओं पर एक टिप्पणीं लिखिए। 10

4. आपदा प्रंबंधन चक्र और इसके मुख्य चरणों को समझाइए। 10

5. संस्थागत ढ़ाँचें और क्षति मूल्यांकन योजना के तरीकों पर संक्षेप में चर्चा कीजिए। 10

सत्रीय कार्य– ग

निम्नलिखित में से प्रत्येक के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए।

6. भूकंप और सुनामी पर एक टिप्पणी लिखिए। 06

7. गर्म लहरों और ठंडी लहरों पर चर्चा किजिए। 06

8. आपदा के समय आश्रय के महत्व का संक्षेप मे वर्णन कीजिए। 06

9. जलवायु परिवर्तन से आप क्या समझते हैं ? 06

10. समुदाय आधारित आपदा प्रबंधन की अवधारणा पर टिप्पणी कीजिए। 06

1. आपदा प्रबंधन में जोखिम और संवेदनशीलता की अवधारणाओं और उनके महत्व पर चर्चा कीजिए। 20

उत्तर

आपदा केवल किसी प्राकृतिक या मानव-निर्मित खतरे के उपस्थित होने से नहीं बनती। जब कोई खतरा लोगों, भवनों, आजीविका, सेवाओं और पर्यावरण को ऐसी स्थिति में प्रभावित करता है जहाँ नुकसान सहने की क्षमता कम होती है, तब आपदा का जोखिम बढ़ता है। इसलिए आधुनिक आपदा प्रबंधन में जोखिम और संवेदनशीलता दो केंद्रीय अवधारणाएँ हैं। इनके बिना यह समझना कठिन है कि एक ही प्रकार की घटना अलग-अलग स्थानों पर अलग स्तर की क्षति क्यों करती है और किन लोगों को पहले सुरक्षा की आवश्यकता है।

जोखिम की अवधारणा

जोखिम से आशय भविष्य में होने वाली संभावित हानि से है। यह हानि जीवन, स्वास्थ्य, संपत्ति, आजीविका, सार्वजनिक सेवाओं, अर्थव्यवस्था या पर्यावरण से संबंधित हो सकती है। जोखिम किसी निश्चित नुकसान की घोषणा नहीं है, बल्कि इस बात की संभावना और संभावित गंभीरता को व्यक्त करता है कि कोई खतरा किन परिस्थितियों में कितना नुकसान कर सकता है। सरल रूप में जोखिम को खतरे, जोखिम के संपर्क में आने वाले तत्वों, उनकी संवेदनशीलता और उपलब्ध क्षमता के संयुक्त परिणाम के रूप में समझा जा सकता है।

जोखिम के चार महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं। पहला, खतरा या विपदा, जैसे भूकंप, बाढ़, चक्रवात, सूखा, औद्योगिक दुर्घटना या आग। दूसरा, अनावरण या संपर्क, अर्थात कितने लोग, मकान, सड़कें, अस्पताल, फसलें या अन्य संपत्तियाँ खतरे वाले क्षेत्र में स्थित हैं। तीसरा, संवेदनशीलता, जो यह बताती है कि संपर्क में आए तत्व कितनी आसानी से क्षतिग्रस्त हो सकते हैं। चौथा, क्षमता, जिसमें सुरक्षित निर्माण, प्रशिक्षण, संसाधन, सामाजिक सहयोग, चेतावनी व्यवस्था और संस्थागत तैयारी शामिल हैं। क्षमता बढ़ने पर समान खतरे में भी नुकसान कम किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, नदी के बाढ़-मैदान में दो बस्तियाँ समान जलस्तर की बाढ़ का सामना कर सकती हैं। यदि एक बस्ती में पक्के ऊँचे मकान, निकासी मार्ग, चेतावनी प्रणाली और सुरक्षित आश्रय हैं,